

सांख्य दर्शन में प्रकृति एवं उसका महत्व

सांख्य दर्शन में प्रकृति की अवधारणा : सांख्य दर्शन भारतीय दर्शन की एक प्रमुख प्रणाली है, जो द्वैतवाद (दोनों पदार्थ और चेतना का अस्तित्व) पर आधारित है। सांख्य दर्शन के अनुसार, सृष्टि का निर्माण दो प्रमुख तत्वों—प्रकृति (प्रकृति) और पुरुष (चेतना) के संयोग से होता है। प्रकृति को अचेतन, अपरिवर्तनीय और अनादि तत्व माना गया है, जो सृष्टि के समस्त भौतिक और मानसिक तत्वों का स्रोत है। प्रकृति को त्रिगुणात्मक (तीन गुणों से युक्त) माना जाता है, जिसमें सत्त्व, रजस, और तमस तीन गुण शामिल हैं।

प्रकृति की विशेषताएँ :

1. **अचेतन (Non-conscious) :** प्रकृति अचेतन तत्व है, जिसमें स्वयं कोई चेतना या ज्ञान नहीं होता। यह केवल भौतिक और मानसिक तत्वों का स्रोत है।
2. **अनादि (Eternal) :** प्रकृति का कोई प्रारंभ या अंत नहीं है। यह शाश्वत और अपरिवर्तनीय है।
3. **त्रिगुणात्मक (Three-fold nature) :** प्रकृति तीन गुणों—सत्त्व, रजस, और तमस से युक्त होती है। इन तीन गुणों के संतुलन और असंतुलन के कारण सृष्टि का निर्माण और विनाश होता है।

प्रकृति के तीन गुण :

1. **सत्त्व (Satva) :** सत्त्व गुण शुद्धता, प्रकाश, और संतुलन का प्रतीक है। यह ज्ञान, शांति, और सकारात्मकता को बढ़ावा देता है। सत्त्व गुण से मानसिक शांति, आत्मा की शुद्धि, और सत्य का अनुभव होता है।
2. **रजस (Rajas) :** रजस गुण सक्रियता, ऊर्जा, और उत्तेजना का प्रतीक है। यह क्रिया, आंदोलन, और परिवर्तन को बढ़ावा देता है। रजस गुण से इच्छाएँ, तृष्णा, और मानसिक अशांति उत्पन्न होती है।
3. **तमस (Tamas) :** तमस गुण जड़ता, अंधकार, और निष्क्रियता का प्रतीक है। यह आलस्य, अज्ञान, और मानसिक अवरोध को बढ़ावा देता है। तमस गुण से मानसिक उदासी भ्रम, और निष्क्रियता उत्पन्न होती है।

□ **प्रकृति का महत्व :** सांख्य दर्शन में प्रकृति का महत्वपूर्ण स्थान है। इसके महत्व को निम्नलिखित बिंदुओं में समझा जा सकता है :

1. **सृष्टि का आधार :** प्रकृति सृष्टि का आधार है। इसके तीन गुणों के संतुलन और असंतुलन के कारण सृष्टि के विभिन्न तत्वों का निर्माण होता है। प्रकृति से ही पांच महाभूत (पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश), पंचतन्मात्राएँ (रूप, रस, गंध, स्पर्श, शब्द), और मन, बुद्धि, अहंकार आदि का निर्माण होता है।
2. **चेतना का अभिव्यक्ति :** प्रकृति के माध्यम से ही पुरुष (चेतना) का अभिव्यक्ति होता है। पुरुष स्वयं निष्क्रिय और अचेतन है, लेकिन प्रकृति के संयोग से यह सृष्टि में सक्रिय और अभिव्यक्त होता है। प्रकृति के बिना पुरुष की कोई भौतिक या मानसिक अभिव्यक्ति नहीं हो सकती।
3. **मुक्ति का मार्ग :** सांख्य दर्शन में मुक्ति का अर्थ है पुरुष और प्रकृति के संयोग से उत्पन्न बंधनों से मुक्त होना। प्रकृति के तीन गुणों के संतुलन और असंतुलन से उत्पन्न मानसिक और भौतिक बंधनों से मुक्त होकर पुरुष अपने वास्तविक स्वरूप (शुद्ध चेतना) का अनुभव करता है। यह मुक्ति आत्म-ज्ञान और आत्म-साक्षात्कार के माध्यम से प्राप्त होती है।
4. **ज्ञान का स्रोत :** प्रकृति ज्ञान का प्रमुख स्रोत है। इसके माध्यम से हम भौतिक और मानसिक तत्वों का ज्ञान प्राप्त करते हैं। प्रकृति के तीन गुणों के अध्ययन से हम मानसिक और भौतिक प्रक्रियाओं को समझ सकते हैं और अपने जीवन में संतुलन और स्थिरता प्राप्त कर सकते हैं।

डॉ. श्रवण कुमार मोदी

सहायक प्राध्यापक, दर्शनशास्त्र विभाग

शिवदेनी राम अयोध्या प्रसाद महाविद्यालय

बारा चकिया, पूर्वी चम्पारण

मो0-9608685335

Email Id- shrawankumarmodi1973@gmail.com